[ समारोह ]

# नरेंद्र कोहली की स्मृति में ऑनलाइन शोकसभा

## साहित्य अकादेमी द्वारा नरेंद्र कोहली के निधन पर उनकी स्मृति में ऑनलाइन शोकसभा का आयोजन




**आलोकपर्व नेटवर्क**

साहित्य अकादेमी द्वारा हिंदी के प्रख्यात कथाकार नरेंद्र कोहली के निधन पर उनकी स्मृति में आज एक ऑनलाइन शोकसभा का आयोजन किया, जिसमें हिंदी के विभिन्न साहित्यकारों द्वारा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पहलुओं को याद करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनके निधन से हिंदी साहित्य-संसार ने भारतीय संस्कृति के एक सच्चे और मुखर प्रवक्ता को खो दिया है। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों के लिए जब भी हमने उन्हें याद किया, वे सदैव हमारे लिए उपलब्ध रहे। उनका निधन हम सबके लिए एक अपूरणीय क्षति है।

कमलकिशोर गोयनका ने कहा कि नरेंद्र कोहली आधुनिक समय के तुलसीदास के रूप में माने हैं। वास्तव में वे भारतीय मन के सर्वाधिक सशक्त लेखक थे। बल्देवभाई शर्मा ने कहा कि उन्होंने जो साहित्य रचा, वह लोकोपकारी था। मानवीयता, राष्ट्रबोध, सांस्कृतिक चेतना और व्यंग्यदृष्टि से संपन्न उनका साहित्य विरल है। दयाप्रकाश सिन्हा ने उनके साथ अपने पचास वर्षों के संबंधों का हवाला देते हुए कहा कि राष्ट्रवादी लेखकों की पंक्ति में नरेंद्र कोहली अग्रणी थे। सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि वे संपूर्ण भारत, भारतीय संस्कृति और भारतीय अस्मिता के लेखक थे। उनका जाना भारतीय साहित्य की मनीषा का नुकसान है। अनामिका ने कहा कि परंपरा एक ऐसी बैटरी है, जिसे सदैव नए सर्किट के चार्ज करने की जरूरत होती है और नरेंद्र कोहली ने प्राचीन कथाओं के पुनर्लेखन के माध्यम से यही काम किया। अनंत विजय ने कहा कि मुझे उनमें कबीर के तत्व ज्यादा नजर आते हैं। वास्तव में तुलसी और कबीर की चेतना के समन्वित व्यक्तित्व के रूप में उन्हें मूल्यांकित करने की जरूरत है। चित्रा मुद्गल ने कहा कि उनको खोना मेरे लिए एक पारिवारिक मित्र को खोना है। उनकी विभिन्न कृतियों को संदर्भित करते हुए उन्होंने 'तोड़ो कारा तोड़ो' को उनकी अप्रतिम कृति के रूप में याद किया। दिविक रमेश ने कहा कि वे एक अनुशासित शिक्षक थे। पुराकथाओं से इतर उनके लेखन पर भी बात होनी चाहिए और उनका समग्र मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मंजुला राणा ने कहा कि मैं नरेंद्र कोहली को सांस्कृतिक राष्ट्रवादी लेखक के रूप में स्वीकारती हूँ। भारतीय साहित्य ने उनके निधन से एक युगपुरुष खो दिया है। इस अवसर पर प्रेम जनमेजय, बुद्धिनाथ मिश्र, नंदकिशोर पांडेय और चित्तरंजन मिश्र ने भी उनसे जुड़े संस्मरणों को साझा करते हुए उनके कृतित्व और योगदान की चर्चा की और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा के अंत में सचिव, साहित्य अकादेमी ने कहा कि हिंदी के प्रसिद्ध लेखक रमेश उपाध्याय, मंजूर एहतेशाम और सुरेश सेठ को भी हमने खो दिया है। उन्हें भी साहित्य अकादेमी की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।